फल एवं सब्जियों में मूल्यवर्द्धन

अर्चना कुमारी*

फल एवं सब्जियों में मूल्यवर्द्धन का विशेष महत्व है। उत्पादन के साथ-साथ छोटी-छोटी बातों पर ध्यान दिया जाए तो इससे किसानों को लाभ होगा। ऐसा देखा जाता है कि किसी खास अवधि में सब्जियाँ बाजार में काफी मात्रा में आ जाती हैं तथा कभी कमी रहती है। अगर सब्जियों को बाहर के बाजार में भेजना है तो एक ही तरह की सब्जी ज्यादा मात्रा में लगाना अच्छा होगा, लेकिन स्थानीय बाजार के लिए विविध तरह की सब्जियां लगाना अच्छा होगा।

कुछ नई सब्जियों को भी लगाना चाहिए। फूलगोभी की जगह ब्रोकली को लगा सकते हैं। यह फूलगोभी से मिलता-जुलता है लेकिन इसका मूल्य फूलगोभी से अधिक रहता है। चुकन्दर (बीट) की खेती कम होती है। शादी-विवाह के मौसम में इसकी मांग बढ़ जाती है। अक्टूबर माह में ओल की मांग बढ़ जाती है। बेबीकॉर्न लगाकर भी अच्छी आमदनी प्राप्त की जा सकती है। मकोई एवं मिश्रीकंद भी नई फसलें हैं। बैंगन परिवार के मकोई की खेती बैंगन की ही तरह की जा सकती है।

बाजार में सब्जीं की कमी को पहचान कर उत्पादन करना

ऐसा देखा जाता है कि अक्टूबर माह तथा वर्षाकाल के आरंभ में सब्जी की कमी होती है। एक मौसम का अंत एवं दूसरे मौसम की शुरूआत के समय सब्जी की उपलब्धता कम हो जाती है। अगर बुआई/रोपाई की योजना इस प्रकार बनाई जाये कि इस अवधि में सब्जी उत्पादन हो तो अधिक कीमत मिलेगी तथा बिक्री में कोई समस्या नहीं होगी।

समय पर तुड़ाई करना-समय पर तुड़ाई करने से अच्छी सब्जी मिलती है। रेशे की मात्रा अधिक होने से मांग घट जाती है। तुड़ाई में विलम्ब होने से फलन भी कम हो जाता है। भिण्डी को हर तीसरे दिन तोड़ना

बेमौसमी एवं अगेती सब्जियों को लगाना

मौसम से हटकर सब्जी को लगाने से अधिक लाभ होगा। मटर को वर्षाकाल समाप्त होते ही बुआई करने से काफी अधिक कीमत मिलती है। टमाटर से अधिक आमदनी प्राप्त करने के लिए अगस्त माह के अंत या सितम्बर के प्रारंभ में रोपाई करने से अधिक आमदनी होगी। जुलाई के अंत में बुआई करने से भिण्डी में लगने वाला पीत शिरा रोग नहीं लगता है तथा दाम भी अच्छा मिलेगा। इसी तरह से बरसाती आलू एवं प्याज की खेती की जा सकती है। मूली की खेती साल भर की जा सकती है। बेल वाली सब्जियों की अगेती खेती के लिए मध्य दिसम्बर के आसपास पॉली बैग में बीज की बुआई कर पॉलीहाउस में एक माह तक पौध को बढ़ने दें तथा मध्य जनवरी में थाला बनाकर पौध की रोपाई करें।

*विषय वस्तु विशेषज्ञ, कृषि विज्ञान केन्द्र, कस्तूरबाग्राम, इन्दौर

सारणी:- प्रमुख सब्जियों को उपजाने की पद्धति

सब्जियों के नाम	संकर प्रजाति	बीज दर (प्रति हैक्टर)	खाद की मात्रा (प्रति हैक्टर)	उपज क्षमता (टन प्रति हैक्टर)
टमाटर	स्वर्ण सम्पदा, स्वर्ण समृद्धि, पूसा हाइब्रिड-1	150-175 ग्राम	कम्पोस्ट-40 टन एन.पी.के.- 200:250:250 किग्रा/है.	70-80
बैंगन	स्वर्ण शक्ति, विजय, स्वर्ण सम्पदा-6	200 ग्राम	कम्पोस्ट- 25 टन एन.पी.के.- 200:150:100 किग्रा./है.	60
मिर्च	कैप्सिकम भारत, इंद्रा	375 ग्राम	कम्पोस्ट-50 टन एन.पी.के.- 50:150 किग्रा./है.	50
गोभी	हिमानी, स्वाती, इनडम अर्ली, पूसा हाइब्रिड-1	310 ग्राम	कम्पोस्ट-15 टन एन.पी.के.-200:150:150 किग्रा./है.	20-30
बंदगोभी	गंगा, जमुना, कावेरी, श्री गणेश कैबेज न-8	310 ग्राम	कम्पोस्ट-25 टन एन.पी.के.-200:125:100 किग्रा./है.	50-75
खीरा	प्रिया, पूसा संयोग	375 ग्राम	कम्पोस्ट-25 टन एन.पी.के.-200:100:125 किग्रा./है.	75
तरबूज	मधु, अर्का ज्योति	750 ग्राम	कम्पोस्ट-25 टन एन.पी.के- 100:100:125 किग्रा./है.	75
भिण्डी	सोनाली	2.25 से 3.5 किलो	कम्पोस्ट-25 टन एन.पी.के. 150:110:75 किग्रा./है.	25
खरबूजा	स्वर्ण, सोना, पंजाब हाइब्रिड, एच.सी.-5, आई एच आर एफ-1, हाईब्रिड, एम-4	450 ग्राम	कम्पोस्ट-25 टन एन.पी.के.- 100:150:100 किग्रा./है.	20
भिण्डी	सोनाली	2.25 से 3.5 किलो	कम्पोस्ट-25 टन एन.पी.के. 150:110:75 किग्रा./है.	25

चाहिए। खीरा, नेनुआ, कद्दू इत्यादि को भी नाजुक रहने पर ही तोड़ना चाहिए।

ग्रेडिंग एवं पैकिंग करना-टमाटर, बैंगन या अन्य सब्जियों की पहले ग्रेडिंग कर लें। वजन एवं आकर्षक पैक में रखकर बाजार में ले जाएँ। इससे विक्रेता एवं उपभोक्ता दोनों को आसानी होगी। ग्रेडिंग के समय अनावश्यक भाग को हटा देना चाहिए।

टमाटर की पैकिंग

बोरेक्स का प्रयोग-फूलगोभी में अच्छे गुणवत्ता वाले (सफेद एवं आकर्षक) फूल प्राप्त करने के लिए खाद के साथ बोरेक्स (15 किग्रा./है.) का प्रयोग काफी लाभदायक होता है। फल एवं सब्जियों खासकर लीची, टमाटर इत्यादि में बोरेक्स के 0.2 प्रतिशत (2 ग्राम/लीटर) घोल का छिड़काव फलों को फटने से बचाता है एवं उनमें गुणवत्ता सुधार भी लाता है। फूलगोभी को धूप से बचाने के लिए फूल को उसी की पत्तियों से ढक देना (ब्लाचिंग) काफी लाभदायक होता है इससे सफेद एवं आकर्षक फूल मिलते हैं। इनकी बाजार में मांग अधिक होती है।

सब्जियों की अधिक उपज के लिए आजकल एफ-1 के संकर बीज बनाये जा रहे हैं। इसकी उपज क्षमता साधारण किस्मों की अपेक्षा दो से पाँच गुनी तक होती है। इसके बीज अपेक्षाकृत महँगे होते हैं पर बीज दर काफी कम होती है। साथ ही, एक बात ध्यान देने योग्य है कि इसकी खेती में भरपूर कम्पोस्ट या सड़ी हुई गोबर की खाद के अलावा अनुशंसित मात्रा में रासायनिक खादों का भी प्रयोग करना चाहिए। खेतों में वर्षा के दिनों में पानी का निकास तथा गर्मी में सिंचाई का भी किसानों को प्रबंध करना चाहिए। बेल वाली किस्मों की उपज लेने पर यह देखना चाहिए कि उनके फल जमीन के संसर्ग में न आयें। संकर टमाटर की खेती में हर पौधे को एक लकड़ी का सहारा दें जिससे अधिक फल आने पर वे टूटें नही। ■

भाकृअनुप की लोकप्रिय पत्रिका

'खेती' फरवरी, 2023 अंक के प्रमुख आकर्षण

- कृषि में कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग
- सेमीयालता का बढाएं उत्पादन
- मुर्गीपालन से कमाई
- कृषि में जैव प्रौद्योगिकी
- सुनहरी महशीर का प्रजनन और बीज उत्पादन
- बसंतकालीन गन्ने की उन्नत खेती
- बायाफोर्टिफाइड फसलों की बढ़ती महत्ता
- प्रचलित होती बहुपरत खेती
- आर्द्र क्षेत्रों में मात्स्यिकी संवर्द्धन
- मृदारहित कृषि की बढ़ती लोकप्रियता
- ग्रीष्मकालीन मूंग की खेती
- बकरियों में थनैला रोग
- सूक्ष्मजीवों द्वारा बीजों का टीकाकरण
- पाले से फसलों का बचाव
- चने के कीटों का समन्वित प्रबंधन
- ट्री टोमेटो की खेती
- कृषि में मौसम पूर्वानुमान का महत्व
- मेंथा है बारहमासी फसल

संपर्क सूत्र: प्रभारी, व्यवसाय एकक, भाकृअनुप-कृषि ज्ञान प्रबंध निदेशालय, कैब-1, पूसा गेट, नई दिल्ली-110012

दूरभाष: 25843657, www.icar.org.in